HISTORY

B.A.PART-II (Subs)

Paper-II (Mughal period)

Unit-I, (The Religious Policy Of Akbar)

Dr. GUDDY KUMARI

(Guest Lecturer), History Deptt.

A.N.D. College, Samastipur

Lecture Series - 60

"अकबर की धार्मिक नीति"

(The Religious Policy Of Akbar)

भारत एक विशाल देश था। सदियों से अनेक धर्मावलंबियों की यह निवास स्थाली थी। धार्मिक संकीर्णता की नीति अपनाकर कोई भी शासक साम्राज्य को सुरक्षित नहीं रख सकता था। अकबर स्वयं सुन्नी मुसलमान था। वह ईश्वर के प्रति भक्ति रखता था। किंतु अपने पूर्वजों की तरह वह धर्मांध नहीं था। वह हिंदू और मुसलमानों के बीच भेदभाव नहीं रखता था। वह सही अर्थ में एक राष्ट्रीय राज्य की स्थापना करना चाहता था। राष्ट्रीय राज्य की स्थापना के लिए धार्मिक विभेद को दूर करना आवश्यक था। यही कारण था कि अकबर ने एक नया धर्म का प्रचार किया था।

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

राजनीतिक उद्देश्य के साथ-साथ अकबर सत्य की पहचान भी करना चाहता था। वस्तुतः अनेक धर्मों के स्थान पर अकबर एक ऐसे नए धर्म की स्थापना करना चाहता था। जिसमें सभी धर्मों का सार निहित हो तथा उसमें समन्वय और सौहार्द की भावना हो। 'दीन ए इलाही' इसी प्रयास की उपज थी।

धार्मिक नीति के फलस्वरूप अकबर ने धार्मिक उदारता की नीति अपनायी। धर्म के प्रति अपने उदार दृष्टिकोण के तहत अकबर ने 1575 में 'फतेहपुर सीकरी' में इबादत खाने (पूजा गृह) की स्थापना करवायी। जिसका उद्देश्य था परस्पर धार्मिक विषयों पर वाद-विवाद । हर रविवार की संध्या को इबादतखाने में विभिन्न धर्मों के लोग एकत्र होकर धार्मिक विषयों पर वाद-विवाद किया करते थे। इबादत खाने के प्रारम्भिक दिनों में मुसलमान, शेख, पीर, उलेमा ही यहां धार्मिक वार्ता हेतु उपस्थित होते थे परन्तु कालान्तर में अन्य धर्मों के लोग जैसे इसाई, जरथुस्ट्रवादी, हिन्दू, जैन, बौद्ध, फारसी, सूफी आदि को भी इबादत खाने में अपने-अपने धर्म के पत्र को प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित किया गया। इबादत खाने में होने वाले धार्मिक वाद विवादों में अबुल फजल की महत्वपूर्ण भूमिका होती थी।

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

अगस्त सितम्बर 1579 में अकबर ने 'मजहर नामक दस्तावेज जारी किया । इस दस्तावेज को जारी करने की प्रेरणा अकबर को शेख मुबारक फैजी एवं अबुल फजल मे मिली । मजहर जारी होने के बाद अकबर ने सुल्ताने आदिल की उपाधि ग्रहण किया । अब वह धार्मिक विषयों का सबसे बड़ा अधिकारी बन गया । महजर में अकबर को यह अधिकार प्राप्त हो गया कि आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए किसी एक विचार जो जिसे वह सर्वोत्तम समझे उसे मान्यता प्रदान करे।

दीन-ए-इलाही धर्म

सभी धर्मों के सार संग्रह के रूप में अकबर 1582 में दीन-ए-इलाही (तकहीद-ए-इलाही) या दैवी एकेश्वरवाद (Divine Monotheism) नामक धर्म के प्रवर्तक बना । इस धर्म का अबुल फजल प्रधान पुरोहित था । इस धर्म में दीक्षा प्राप्त करने वाला व्यक्ति अपनी पगड़ी एवं सिर को सम्राट अकबर के चरणों में रखता था। सम्राट उसे उठाकर उसके सिर पर पुनः पगड़ी रखकर शष्ट (अपना स्वरूप) प्रदान करता था जिस पर 'अल्लाह हो अकबर खुदा रहता था। इस मत के अनुयायी को अपने जीवित रहने के समय ही श्राद्ध भोज देना होता था, मांस खाने पर प्रतिबन्ध था एवं वृद्ध महिला तथा कम उम्र की लड़कियों से विवाह करने पर रोक थी। महत्वपूर्ण हिन्दू

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

राजाओं में बीरबल ने इस धर्म को स्वीकार किया था। इतिहासकार स्मिथ ने दीन-ए-इलाही पर उदगार व्यक्त करते हुए कहा कि 'यह उसकी साम्राज्यवादी भावनाओं का शिशु व उसकी राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं का एक धार्मिक जामा है।' पुनः कहा "दीन-ए-इलाही अकबर के अहंकार एवं निरंकुशता की भावना की उपज थी।'

अबुल फजल ने अरस्तु द्वारा उल्लिखित 4 तत्वों आग, हवा, पानी, भूमि का सम्राट अकबर की शरीर संरचना में समावेश माना । अबुल फजल ने योद्धाओं की तुलना 'अग्नि' से, शिल्पकारों एवं व्यापारियों की तुलना 'हवा से, विद्वानों की तुलना 'पानी' से एवं किसानों की तुलना 'भूमि' से की।

शाही कर्मचारियों का वर्गीकरण करते हुए अबुल फजल ने उमरा वर्ग की 'अग्नि' से, राजस्व अधिकारियों की 'हवा' से, विधिवेता, धार्मिक अधिकारी, ज्योतिष, कवि एवं दार्शनिक की पानी एवं बादशाह के व्यक्तिगत सेवकों की तुलना भूमि से की।

सूफी मत में अपनी आस्था जताते हुए अकबर ने 'चिश्ती संप्रदाय' को आश्रय दिया । अकबर ने सभी धर्मों के प्रति अपनी सहिष्णुता की भावना के कारण अपने शासन काल में आगरा एवं लाहौर में ईसाइयों को गिरजाघर बनवाने की अनुमति प्रदान की। अकबर ने

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

जैन धर्म के जैनाचार्य हरिविजय सूरि को जगत गुरु' की उपाधि प्रदान की। खरतर-गच्छ सम्प्रदाय के जैन आचार्य जिनचन्द्र सूरि' को अकबर ने करीब 200 बीघा भूमि जीवन निर्वाह हेतु ओर प्रदान किया सम्राट पारसी त्योहार एवं संवत में विश्वास करता था । अकबर पर सर्वाधिक प्रभाव हिन्दू धर्म का पड़ा।

!!!!!!!! धन्यवाद !!!!!!!!!

Dr Guddy kumari (A.N.D College)